ECO-RESTORATION OF WASTELANDS

A THREE DAY TRAINING PROGRAMME FOR OTHER STAKEHOLDERS

A three days training on "**Eco-restoration of Wastelands"** was organized by the Himalayan Forest Research Institute, Shimla from 29th to 31st December, 2014 at the behest of Ministry of Environment, Forests and Climate Change (MOEFCC), Govt. of India, New Delhi in the Conference Hall of the Institute. The training programme was organized for the benefit of other stakeholders of the state. Forty two participants consisting of teachers of Educational Institutions, Panchayat Representatives, Non Govt. Organizations (NGOs), Members of Mahila Mandals, Social Activists and Media persons from Esteemed News Papers/Doordarshan and Private News Channels took part in this training programme. The main objective for organizing this training was to sensitize the other stakeholders about the need and techniques of **Eco-restoration of Wastelands.**

Shri Virender Kashyap, Hon'ble Member of Parliament, inaugurated Training programme on 29th December, 2014. The Hon'ble MP appreciated the efforts the Himalayan Forest Research Institute, Shimla and said that the Institute is working in tune with the National mandate and as per the present day requirements of the general public. He further added that it is the need of the hour that Lab Research should reach up to the common masses so that they can take the benefits of scientific knowledge and expertise. The chief guest specifically reiterated the importance of the Himalayas on this occasion and said that our existence is closely linked with the existence of the **Great Himalayas** and the people in this part of the world are lucky to breathe in clean ambience. He called upon the audience to realize the greatest responsibility of protection and conservation of the environment which is a global issue now days.

Director of the Institute Dr. V.P. Tewari apprised of the Chief Guest and the other participants that the Himalayan Forest Research Institute besides carrying out the Research Activities, imparts the training programmes to the overall benefit of the stakeholders from time to time. He further said that common folk always remain the focus of the research projects and programmes of this institute.

Then the course director of this training Dr. R.K. Verma presented the detail outline of the training-cum- demonstration programme briefly and said that during this programme the participants will also be taken to Darlaghat Ambuja Cement Factory on a field visit to show the plantation activities done by the institute on the mined out areas.

Dr K.S. Kapoor, Group coordinator Research and Senior Scientist of the institute gave a brief presentation about the history of Himalayan Forest Research Institute and the main mandate of this Institute.

The Resource Person from University of Horticulture and Forestry, Nauni, State Forest Department, Forest Research Institute, Dehradun and Scientists from the Institute gave elaborated presentations on various aspects of the Restoration of the Degraded and Mined out Areas.

On the second day, the participants of this training programme were taken to **Kashlog- the Mining Site of Ambuja Cement Plant -** where Dr. R.K. Verma, Course Director of this training programme apprised the participants about the important activities of open cast mining and the Institute's interventions for Eco-restorations of mined out areas .

On the third day of the training, the Resource person viz; Dr T.N. Lakhanpal, Dr. Rajesh Sharma, Dr, Sandeep Sharma, Dr. Jagdish Singh, Dr. Ranjeet Kumar, Dr Pawan Rana and Dr. Vaneet Jishtu gave elaborated and illustrative presentations on multiple aspects on **Eco-restoration of Wastelands.** After that the participants visited the different laboratories and Herbarium of the institutes where useful information about the Ultra Modern Scientific Equipments were given by the concerned Laboratory Incharge.

During the concluding session of the training programme, Director of the Institute Dr. V.P. Tewari distribute the Certificates to the participants and thanked all the participants for giving their valuable time and making this programme successful. A feedback was also taken from the participants of the training programme to compile the valuable and important suggestions in futuristic research training programmes. All the participants praised the organizers for providing awareness and sensitization on such an important and relevant topic.

*****

Media Coverage

दिव्य हिमाचल 30.12.2014

लक्ष्य — सेमिनार में बोले हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक

पर्यावरण सुरक्षा पर दें ध्यान

▪ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

विकासात्मक गतिविधियों के साथ-साथ पर्यावरण सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए ध्यान देना अति आवश्यक है। संस्थान की विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधान परियोजनाएं हितधारकों की अनुशंसाओं पर आधारित होती हैं और इसका मुख्य उद्देश्य उन्हें लाभ पहुंचाना है।

यह बात हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा बंजर भूमि के पुनर्स्थापन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने कही। इस प्रशिक्षक कार्यक्रम का शुभारंभ सांसद वीरेंद्र कश्यप ने किया। प्रशिक्षण का समापन 31 दिसंबर को होगा। इसमें प्रदेश के विभिन्न पंचायतों के चुने हुए प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता, अध्यापकगण व गैर सरकारी संगठनों के सदस्य भाग ले रहे हैं। सांसद वीरेंद्र कश्यप ने संस्थानों के प्रयासों की सराहना की।

उन्होंने कहा कि वास्तव में देश के करीब 23 प्रतिशत भाग पर आच्छादित वन संपदा अपने अंदर कई मूल्यों को समाहित किए हुए हैं। इस दौरान पाठ्यक्रम निदेशक डा. आरके वर्मा ने बताया कि उपलब्ध भूमि संसाधनों पर लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण अधिक दबाव है और भोजन, ईंधन, चारे व रेशों की मांग भी बढ़ रही है।

इस परिदृश्य में किसी भी प्रकार की बेकार या बंजर भूमि पर हरित आवरण स्थापित करना समय की मांग है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. केएस कपूर ने प्रतिभागियों को संस्थान की विविध एवं विस्तृत जानकारी प्रदान की। इसके बाद बागबानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय सोलन से आए

▪ सांसद वीरेंद्र कश्यप ने की प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत

विशेषज्ञों डा. डीआर भारद्वाज व डा. सतीश भारद्वाज वन विभाग के अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल डा. वीआरआर सिंह, सेवानिवृत्त प्रो. फेस डा. टीएन लखनपालन, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के डा. एचवी वशिष्ट द्वारा बंजर भूमि पुनर्स्थापना से संबंधित अनुसंधान कार्यों एवं निष्कर्षों का विस्तृत प्रस्तुतिकरण किया।

पजाब केसरी 30.12.2014

बंजर भूमि पर भी आएगी हरियाली

हिमालयन वन अनुसंधान ... हितधारकों को 3 दिन तक मिलेगा प्रशिक्षण

शिमला, 29 दिसम्बर (तिलक): राज्य में बंजर या बेकार पड़ी भूमि पर भी हरियाली आ सकेगी जिसका सीधा लाभ भूमि मालिकों/किसानों को मिलेगा। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में सोमवार को बंजर भूमि की पुन: स्थापना विषय पर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सौजन्य से अन्य हितधारकों के लिए 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन सांसद वीरेंद्र कश्यप द्वारा किया गया।

31 दिसम्बर तक चलने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के विभिन्न पंचायतों के चुने हुए प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्त्ता, शिक्षण संस्थानों के अध्यापक एवं गैर-सरकारी संगठनों के लगभग 50 सदस्य भाग ले रहे हैं। शुभारंभ अवसर पर सांसद वीरेंद्र कश्यप ने संस्थान के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वास्तव में देश के लगभग 23 प्रतिशत भाग पर आच्छादित वन सम्पदा अपने अंदर कई मूल्यों को समाहित किए हुए है।

उन्होंने कहा कि वन सम्पदा के अंदर आजीविका चलाने व गरीबी उन्मूलन की अद्भुत क्षमता विद्यमान है। इसके अलावा चारागाह भूमि तथा बंजर भूमि जैसे अन्य स्त्रोत भी वन सम्पदा में ही निहित हैं। संस्थान के प्रयासों की सराहना करते हुए मुख्यातिथि ने कहा कि इस प्रशिक्षण का प्रत्यक्ष लाभ अन्य हितधारकों के माध्यम से वानिकी क्षेत्र से जुड़े लोगों को परोक्ष रूप से प्राप्त होगा तथा यह कार्यक्रम बंजर भूमि के पुनर्स्थापन की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. वी.पी. तिवारी ने मुख्यातिथि तथा अन्य सभी प्रशिक्षार्थियों का स्वागत करते हुए सूचित किया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून जोकि पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय का एक स्वायत्त निकाय है, वानिकी अनुसंधान के कार्यों के साथ-साथ समय-समय पर हितधारकों के लिए विविध प्रकार के प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

शिमला : प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते सांसद वीरेंद्र कश्यप। (छाया)

संस्थान की गतिविधियों बारे बताया

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के समूह समन्वयक 'अनुसंधान व वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. के. एस. कपूर ने एक सारगर्भित प्रस्तुतीकरण द्वारा प्रतिभागियों को संस्थान की विविध एवं विस्तृत गतिविधियों बारे जानकारी प्रदान की गई। उसके बाद बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय सोलन से आए विषय विशेषज्ञ डा. डी.आर. भारद्वाज व डा. सतीश भारद्वाज, वन विभाग से अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल डा. वी.आर.आर. सिंह, सेवानिवृत्त प्रोफैसर डा. टी.एन. लखनपाल, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के डा. एच.वी. वशिष्ठ द्वारा बंजर भूमि पुन:स्थापना से संबंधित अपने अनुसंधान कार्यों एवं निष्कर्षों का विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने विषय विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों द्वारा प्रदान की गई दुर्लभ जानकारियों का भरपूर लाभ उठाया।

बढ़ रही है भोजन व ईंधन की मांग

प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निदेशक डा. आर.के. वर्मा ने बताया कि संस्थान द्वारा यह 3 दिवसीय कार्यक्रम पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सौजन्य से किया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि उपलब्ध भूमि संसाधनों पर लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण अत्यधिक दबाव है। इससे भोजन, ईंधन, चारे व रेशों की मांग भी बढ़ रही है। इस परिदृश्य में किसी भी प्रकार की बेकार या बंजर भूमि पर हरित आवरण स्थापित करना समय की मांग है। उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को सरल प्रस्तुतीकरणों के माध्यम से विविध प्रकार की वैज्ञानिक जानकारी दी जाएगी तथा साथ ही दाड़लाघाट में स्थित अंबुजा सीमेंट उद्योग द्वारा जनित खनन क्षेत्र में संस्थान द्वारा कराई गई वनस्पतिक पुनर्स्थापन गतिविधियों को दिखाने के लिए एक दिन का क्षेत्रीय भ्रमण भी करवाया जाएगा।

हिमाचल दस्तक 30.12.2014

वन संपदा आजीविका कमाने में मददगार

सांसद वीरेंद्र ने भूमि की पुनः स्थापन कार्यक्रम का किया शुभारंभ

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला सोमवार से 31 दिसंबर तक बंजर भूमि की पुनः स्थापन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। इसका शुभारंभ सांसद वीरेंद्र कश्यप ने किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के विभिन्न पंचायतों के चुने हुए प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षण संस्थानों के अध्यापकगण एवं गैर सरकारी संगठनों के लगभग 50 सदस्यों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए संसद सदस्य विरेन्द्र कश्यप ने संस्थान के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वास्तव में देश के लगभग 23 प्रतिशत भाग पर आच्छादित वन संपदा अपने अंदर कई मूल्यों को समाहित किए हुए है। उन्होनें कहा कि वन संपदा के अंदर आजीविका चलाने व गरीबी उन्मूलन की अदभूत क्षमता विद्यामान है। इसके अलावा चारागाह भूमि तथा बंजर भूमि जैसे अन्य स्त्रोत भी वन संपदा में ही निहित है । संस्थान के प्रयासों की सराहना करते हुए मुख्यातिथि ने कहा कि इस प्रशिक्षण का प्रत्यक्ष लाभ अन्य हितधारकों के माध्यम से वानिकी क्षेत्र से जुड़े लोगों को परोक्ष रूप से प्राप्त होगा तथा यह कार्यक्रम बंजर भूमि के पुनस्थापन की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. वीपी तिवारी ने मुख्यातिथि तथा अन्य सभी प्रशिक्षार्थियों का स्वागत करते हुए सूचित किया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून, जो कि पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत निकाय है, वानिकी अनुसंधान के कार्यों के साथ-साथ समय-समय पर हितधारकों के लिए विविध प्रकार के प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

बंजर भूमि पर हरित आवरण स्थापित करना समय की मांग

कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. आरके वर्मा ने बताया कि संस्थान द्वारा यह तीन दिवसीय कार्यक्रम पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से किया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि उपलब्ध भूमि संसाधनों पर लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण अत्याधिक दबाव है तथा भोजन ईंधन चारे व रेशों की मांग भी बढ़ रही है। इस परिदृश्य में किसी भी प्रकार की बेकार या बंजर भूमि पर हरित आवरण स्थापित करना समय की मांग है। उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को सरल प्रस्तुतिकरणों के माध्यम से विविध प्रकार की वैज्ञानिक जानकारी दी जाएगी तथा साथ ही दाड़लाघाट में स्थित अंबुजा सीमेंट उद्योग द्वारा जनित खनन क्षेत्र में, संस्थान द्वारा कराई गई वनस्पतिक पुनः स्थापन गतिविधियों को दिखाने के लिए एक दिन का क्षेत्रीय भ्रमण भी करवाया जाएगा। कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने विषय विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों द्वारा प्रदान की गई दुर्लभ जानकारियों का भरपूर लाभ उठाया।

दैनिक भास्कर30.12.2014

बंजर भूमि को लहलहाने के लिए ट्रेनिंग शुरू

पुनर्स्थापन बंजर भूमि पारिस्थितिक पुनर्स्थापन विषय पर एचएफआरआई में तीन दिवसीय शिविर का कश्यप ने किया शुभारंभ

भास्कर न्यूज | शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में बंजर भूमि पारिस्थितिक पुनर्स्थापन अन्य हितधारकों के लिए विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ सांसद वीरेंद्र कश्यप ने किया। 31 दिसंबर तक चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में पंचायतों के चुने हुए प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षण संस्थानों के अध्यापकगण एवं गैर सरकारी संगठनों के लगभग 50 सदस्य भाग ले रहे हैं।

प्रशिक्षण के दौरान इन्हें बेकार भूमि को प्रयोग में लाने के लिए जानकारी दी जाएगी। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सांसद वीरेंद्र कश्यप ने संस्थान के प्रयासों की सराहना करते कहा कि इस प्रशिक्षण का प्रत्यक्ष लाभ अन्य हितधारकों के माध्यम से वानिकी क्षेत्र से जुड़े लोगों को परोक्ष रूप से प्राप्त होगा। यह कार्यक्रम बंजर भूमि के पुनर्स्थापन की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

सेमीनार के शुभारंभ पर बतौर मुख्यअतिथि मौजूद सांसद वीरेंद्र कश्यप।

प्रदेश में एक तिहाई भूमि बंजर संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून वानिकी अनुसंधान के कार्यों के साथ-साथ हितधारकों के लिए विविध प्रकार के प्रशिक्षण भी दिया जाता है। उन्होंने कहा कि हिमाचल में एक तिहाई भूमि बंजर है। इस भूमि में अब तक कुछ नहीं लगाया गया है। यदि इस बंजर भूमि को उपयोग में लाया जाए तो इससे काफी लाभ होगा। तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को सुझाव दिए जाएंगे।

डॉ. केएस कपूर, नौणी के विशेषज्ञ डॉ. डीआर भारद्वाज, डॉ. सतीश भारद्वाज, वन विभाग हिमाचल प्रदेश से अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल डॉ. वीआरआर सिंह, सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. टीएन लखनपाल, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के डॉ. एचवी बशिष्ट ने भी प्रशिक्षणार्थियों को जानकारियां दी।

ये होगा शिविर में : प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. आरके वर्मा ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को सरल प्रस्तुतिकरणों से अलग-अलग प्रकार की वैज्ञानिक जानकारी दी जाएगी। इस दौरान दाड़लाघाट स्थित अंबुजा सीमेंट उद्योग की ओर से जनित खनन क्षेत्र में संस्थान की ओर से कराई गई वानस्पतिक पुनर्स्थापन गतिविधियों को दिखाने के लिए एक दिन का क्षेत्रीय भ्रमण भी करवाया जाएगा।

अमर उजाला 30.12.2014

हिमाचल में एक तिहाई भूमि बंजर

हिमालयन वन अनुसंधान के वैज्ञानिकों का खुलासा

बंजर भूमि फिर से इस्तेमाल करने पर कार्यशाला आरंभ

सांसद वीरेंद्र कश्यप ने किया तीन दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

अमर उजाला ब्यूरो

शिमला। प्रदेश में एक तिहाई भूमि आज भी बंजर है। इसे कैसे इस्तेमाल योग्य बनाया जा सकता है, इस विषय पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी में तीन दिवसीय कार्यशाला शुरू हुई। कार्यशाला तीन दिन चलेगी। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से चलने वाली कार्यशाला का शुभारंभ सांसद वीरेंद्र कश्यप ने किया।

इसमें प्रदेश के विभिन्न पंचायतों से चुने हुए प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षण संस्थानों के अध्यापक एवं गैर सरकारी संगठनों के लगभग 50 सदस्य भाग ले रहे हैं। वीरेंद्र कश्यप ने संस्थान के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वास्तव में देश के लगभग 23 प्रतिशत भाग पर आच्छादित वन संपदा अपने अंदर कई मूल्यों को समाहित किए हुए है। संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है। वानिकी अनुसंधान के कार्यों के साथ हितधारकों के लिए विविध प्रकार के प्रशिक्षण भी देता है। पाठ्यक्रम निदेशक डा. आरके वर्मा ने कहा कि बंजर भूमि पर हरित आवरण स्थापित करना समय की मांग है।

कहा कि प्रशिक्षणार्थियों को सरल प्रस्तुतिकरणों के माध्यम से विविध प्रकार की वैज्ञानिक जानकारी दी जाएगी। दाड़लाघाट स्थित अंबुजा सीमेंट उद्योग का भी दौरा करवाया जाएगा। संस्थान के समूह समन्वयक व वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. केएस कपूर ने प्रतिभागियों को संस्थान की विविध एवं विस्तृत गतिविधियों की जानकारी दी। बागवानी एवं वानिकी विधि सोलन से आए विषय विशेषज्ञ डा. डीआर भारद्वाज, डा. सतीश भारद्वाज, वन विभाग से अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल डा. वीआरआर सिंह, सेवानिवृत्त प्रो. टीएन लखनपाल, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के डा. एचवी वशिष्ट ने अपने अनुसंधान कार्यों एवं निष्कर्षों का विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की कार्यशाला का उठाया लाभ

शिमला, 31 दिसम्बर (तरजीव): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से 29 से 31 दिसम्बर तक आयोजित कार्यशाला का सभी प्रतिभागियों ने लाभ उठाया। इस दौरान विषय विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों द्वारा दुर्लभ जानकारी दी गई। संस्थान की ओर से बंजर भूमि की पुन: स्थापना विषय पर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के साथ मिलकर अन्य हितधारकों के लिए 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिवस में पाठ्यक्रम निदेशक डा. आर.के. वर्मा द्वारा सभी प्रशिक्षणार्थियों को अंबुजा सीमेंट खान क्षेत्र कश्लोग का क्षेत्रीय भ्रमण करवाया गया, जहां पर उन्हें खनन की गतिविधियों के बारे में अवगत करवाया गया। तदोपरांत इसके पुन: स्थापन के बारे में भी उन्हें विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम के तीसरे एवं अंतिम दिन शिमला के वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों डा. राजेश शर्मा, डा. संदीप शर्मा, डा. जगदीश सिंह, डा. रणजीत कुमार, डा. वनीत जिष्ट और डा. पवन राणा वन द्वारा विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण एवं मौलिक जानकारी दी गई।

शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान द्वारा आयोजित कार्यशाला के दौरान संयुक्त चित्र में प्रतिभागी।

पंजाब केसरी
01. 01. 2015

दिव्य हिमाचल
01.01.2015

दिव्य हिमाचल

एक नजर

शिमला : हिलायन वन अनुसंधान केंद्र में पंयाघाटी में बंजर भूमि की परिस्थितिकी पुर्नस्थापन पर आयोजित कार्यशाला में भाग लेने पहुंचे बुद्धिजीवि

दिव्य हिमाचल

वर्मी कंपोस्ट बनाने के टिप्स

शिमला — हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा बंजर भूमि के पुनर्स्थापन विषय पर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सौजन्य से अन्य हितधारकों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। बुधवार को तीसरे एवं अंतिम दिन कार्यक्रम की शुरुआत उसी जोश एवं उत्साह से की गई। इसके बाद हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों ने किसान नर्सरी की स्थापना एवं इससे जुड़े विभिन्न विषयों, कृषि व वर्मी कम्पोस्ट, पौध-विविधता का जैव-कीटनाशक के रूप में उपयोगी विषयों पर महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुतिकरण द्वारा प्रदान की।